CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

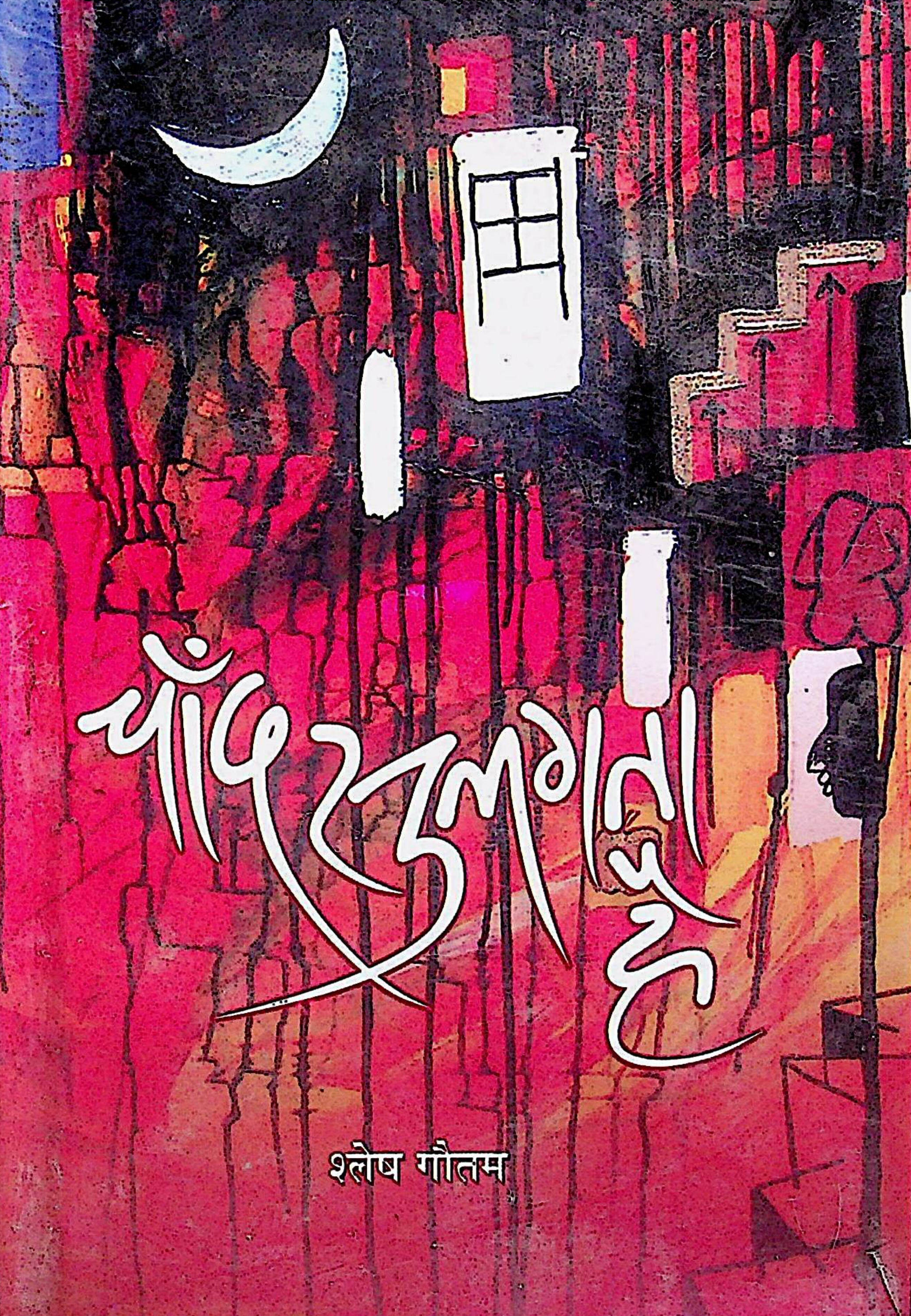

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धरती पर मनुष्य ने जब कविता को जन्म दिया होगा, चाँद ने ही उससे पहले बीजवपन किया होगा।
कौन कवि होगा... आज तक....
जिसने चाँद की प्रेरणा को पंक्तिबद्ध न किया हो।
धीरे-धीरे कवि को लगने लगा कि हम जब तुझसे प्रभावित हैं तो क्या ये भ्रम पालें कि तुझ पर भी हम जैसी गुज़रती होगी।
चाँद बोला— मैं भी सुलगता हूँ! अब 'सुलगना' का श्लेष तो श्लेष गौतम ही बताएंगे। पुस्तक का स्वागत हो।

प्रो० अशोक चक्रधर
नई दिल्ली

'चाँद सुलगता है' गीत संग्रह की पाँण्डुलिपि मेरे हाथों में है। यशस्वी गीत-कवि प्रातः स्मरणीय श्री कैलाश गौतम के पुत्र श्री श्लेष गौतम ने उक्त संग्रह में जीवन के प्रायः सभी आयामों को छूने का प्रयत्न किया है। श्लेष गौतम की रचनाओं की भाषा न सरल है और न ही कठिन, वरन् वह सहज है, अर्थात संवेदन के साथ जन्मी भाषा है। मेरी कोटि-कोटि शुभ कामनाएँ। मेरा विश्वास है कि साहित्य-मन्दिर में 'चाँद सुलगता है' का समुचित स्वागत होगा।

प्रो० सोम ठाकुर
पूर्व उपाध्यक्ष
उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
2.2
RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चाँद सुलगता है

श्लेष गौतम

हिन्दुस्तानी एकेडेमी
12 डी, कमला नेहरू मार्ग
इलाहाबाद-211001

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ISBN : 978-81-85765-64-8

पुस्तक : चाँद सुलगता है

प्रकाशक : सचिव, हिन्दुस्तानी एकेडेमी,
12डी, कमला नेहरू मार्ग, इलाहाबाद-211001
http://hindustaniacademy.blogspot.com
E-mail : hindustaniacademy@gmail.com

मूल्य : एक सौ दस रूपये मात्र (110/-)

संस्करण : प्रथम

प्रकाशन वर्ष : सन् 2012 ई0

आवरण : प्रो. अजय जेटली

कम्पोजिंग : प्रयागराज कम्प्यूटर्स
56/13, मोतीलाल नेहरू रोड, इलाहाबाद

मुद्रक : सुलेख मुद्रणालय
148, हीवेट रोड, इलाहाबाद

CHAND SULAGTA HAI

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पिता श्री कैलाश गौतम की पावन स्मृतियों को समर्पित

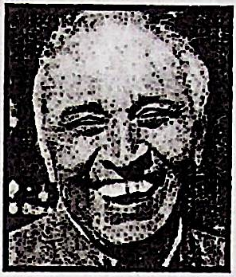

तुम सोये थे चिरनिद्रा में, जाग रहे थे हम
ठहर गया था वक़्त ज़िंदगी काट रहे थे हम
दुख में तुम कंधा होते थे, ग़म को ढोते थे
पीर पराई देख-देखकर घंटो रोते थे
सहज हँसी मुस्कान अनोखी खुला ठहाका था
राग-रंग की बारिश थी वो दौर सुहाना था
कविता के कैलाश हुए तुम जड़ से जुड़े रहे
अपनी माटी गाँव-खेत कण-कण से जुड़े रहे
जनकवि तुम्हीं मनकवि तुम्हीं संगम का तुम्हें प्रणाम
जब तक दुनिया में कविता है रहे तुम्हारा नाम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशकीय

हिन्दुस्तानी एकेडेमी का मूल उद्देश्य आलोचनात्मक तथा विविध विषयों के मौलिक ग्रन्थों को प्रकाशित करना है। कविता के क्षेत्र जो काव्य ग्रन्थ लीक से हटकर अपने रचना-कथ्य को एक अलग तेवर के साथ प्रस्तुत करते हैं, ऐसे महत्वपूर्ण काव्य ग्रन्थों को एकेडेमी ने अपने प्रकाशन में शामिल किया है। जनकवि कैलाश गौतम के सुपुत्र श्लेष गौतम की कविताओं में विसंगतियों पर तीखा प्रहार किया गया है।

आम जन-जीवन की अपेक्षाओं पर खरी उतरती यह कविताएँ आम आदमी की संवेदना से जुड़ी हुई हैं। गहरी सामाजिक संसक्ति को उभारती यह कविताएँ समाज के विभिन्न पक्षों को रेखांकित करती हुई अपनी गरिमा को बनाए रखती हैं।

उम्मीद है कि आम पाठकों के बीच यह संकलन अपनी जगह बना लेगा।

दिनांक 8/2/2012

बृजेश चन्द्र
कार्यकारी सचिव
हिन्दुस्तानी एकेडेमी
इलाहाबाद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्लेष के लिए

जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि मेरे पुत्र तुल्य और मेरे प्रिय मित्र कैलाश गौतम के सुपुत्र श्री श्लेष गौतम का काव्य संग्रह चाँद सुलगता है प्रकाशनाधीन है, कल मैने श्लेष गौतम का काव्य पाठ भी सुना और संचालन भी देखा और मैने यह पाया कि वह यहाँ एक श्रेष्ठ कवि के रूप में स्थापित है। यह भी कि श्लेष एक कवि और संचालक के रूप में बहुत निपुण है। संचालन के द्वारा सिर्फ जनता को ही मंत्र मुग्ध नहीं करते वरन् कवियों पर भी अपनी गहरी छाप छोड़ते है। चाँद सुलगता है कि पंक्तियाँ आज भी सुनने के बाद जुबान पर चढ़ जाती है।" नयी-नयी तकलीफो में दिन रोज गुजरता है, सूख रहे जख्मों को चूहा रोज कुतरता है। सुबह-सुबह ही उम्मीदों का सूरज डूबा है मेरा स्वागत कैसे हो सो नया अजूबा है। मेरे घर के ऊपर ही क्यों चाँद सुलगता है।" इन पक्तियों में कवि के हृदय का दर्द ही नहीं प्रकट होता बल्कि यह पंक्तियाँ तुरन्त जबान पर बैठ ही जाती है। जो भी व्यक्ति इन्हें पढ़ेगा वो इस दर्द को अपना दर्द समझकर महसूस करेगा, भविष्य में याद रखियेगा वहीं कवि जीवित रहेगा जो जनता के होठों पर बैठा होगा, कामना करता हूँ।

"मस्तक पर आकाश उठाये धरती बाँधे पाव से
तुम निकले जिस गाँव से सूरज निकले उस गाँव से"

(गोपाल दास नीरज)

दिनांक 17.3.2012

स्थान - इलाहाबाद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'चाँद सुलगता है'–आँच सी आती है

सुबह सुबह ही उम्मीदों का
सूरज डूबा है
मेरा स्वागत कैसे हो
सो नया अजूबा है
मेरे घर के ऊपर ही
क्यूँ चाँद सुलगता है

सुकवि श्लेष के गीतों–नवगीतों की पाण्डुलिपि से गुज़र रहा हूँ, एहतराम इस्लाम का यह शेर बरबस ज़ेहन पर दस्तक दे रहा है–

तुमने जिन आँखों में कुछ लिक्खा हुआ पाया नहीं
हमने उनमें ढेर सारी पाण्डुलिपियाँ ढूँढ़ लीं।

सचमुच! श्लेष ने पिछले पाँच वर्षों में कविता के मंचों से लेकर पत्र–पत्रिकाओं तक जिस तरह अपने आप को बिखेरा–बटोरा है वह एक सुखद आश्चर्य से भर देता है। एक बड़े रचनाकार के आत्मज होने के जहाँ सौ फायदे हो सकते हैं, वहाँ एक बड़ा नुकसान यह होता है कि आपको अपने कवि पिता की कसौटियों पर ही कसा जाता है और फिर खारिज कर दिया जाता है। मैंने स्वयं यह दर्द शिद्दत से महसूस किया है। अमृतराय जैसे बड़े रचनाकार को तो मुंशी प्रेमचंद की छाया ज़िंदगी भर बेचैन किये रही। श्लेष को भी जहाँ कैलाश गौतम सरीखे कवि पिता के कारण अपार स्नेह और दुलार मिला, वहीं कविता उसके लिए काँटों का ताज लिये हुए आयी, शायद इसीलिए उसके यहाँ चाँद के खिलने की नहीं सुलगने की बात कही गयी है। यह अभिव्यंजना ही अपने आप में मार्मिक है, जो एक कचोट सी देती है, बावजूद इस कचोट के यह गहरे तोष

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का विषय है कि श्लेष ने एक स्पष्ट मौलिक रचनात्मक रेखा पिछले दिनों के साहित्यिक परिदृश्य पर खींची है, जिसकी अनदेखी नहीं की जा सकती। जिन्होंने कैलाश जी को चलते-फिरते, उठते-बैठते, बोलते-बतियाते, ठहाके लगाते, एक दूसरे के सुख-दुख में शरीक होते देखा है वह श्लेष को देखेंगे तो उन्हें सहज ही गौतम जी की अनेक भाव-भंगिमाएँ और छवियाँ साकार होती नज़र आएँगीं पर इससे अलग, श्लेष गौतम की कविता का स्वर नितांत अपना है। वह हर रचना के साथ नयी ज़मीन तोड़ता नज़र आता है, उसमें एक 'जेनुइन' रचनाकार की छटपटाहट साफ़ तौर से देखी जा सकती है। वह अपने समय को कविता की पंक्तियों में हार की तरह गूँथ लेना चाहता है और इसी कारण उसके गीतों-नवगीतों में समाज साँसें लेता हुआ दिखायी देता है। उसकी इसी उड़ान के चलते मन अंतर तक उसके प्रति आशीष और शुभकामनाओं से भीग जाता है, पर उसे भी मेरी ही तरह विरासत में ढेर सारी ईर्ष्याएँ और शत्रुताएँ मिली हैं, आश्चर्य तब होता है जब लोग श्लेष से भी वैसी ही स्पर्द्धा का अनुभव करते हैं जैसे वो कैलाश जी से किया करते थे। ऐसी स्थिति में मुझे कैलाश गौतम और ज़िंदा होते हुए महसूस होते हैं। कृष्णा सोबती तो कहती हैं, 'लेखक की एक ज़िंदगी उसकी मौत के बाद शुरू होती है।' सुख यह है कि कैलाश जी की एक ज़िंदगी उनके बेटे के परिदृश्य पर आने के बाद भी शुरू हो रही है, जहाँ उनका बेटा न केवल उनकी धरोहर को सँजों और सहेज रहा है बल्कि उस सर्जनात्मक सम्पदा में बहुत कुछ रचनात्मक और धनात्मक जोड़ता भी चल रहा है। वैसे भी एहतराम भाई की तरह मैं भी यह मानता हूँ कि समर्थ रचनाकार को उसके प्रशंसकों की संख्या से नहीं उसके ईर्ष्यालुओं की संख्या में पहचाना जाना चाहिए। गर्व और गौरव की बात है कि श्लेष गौतम ने भी अपने कम ईर्ष्यालु पैदा नहीं किये हैं। उसे भी धुआँ देती जलनों और कुढ़नों का सामना करना पड़ रहा है, यह उसके कवि की कामयाबी का भी सबब है।

उसके नवगीतों में ज़िंदगी का ताप है, एक लड़ते-जूझते आदमी के माथे की सलवटें हैं। जिजीविषा है सामान्य लेकिन नए मनुष्य की, इसीलिए उसकी कविता में "मानुस गंध' का पारावार है जिसमें वह स्वयं भी जीता है और आपको जीने का आमंत्रण भी देता है। जीवन का राग और आग, यह दोनों ही तत्व उसकी कविता को शक्ति सम्पन्न बनाते हैं, वह दोनों से ऊर्जा और रस ग्रहण करता है। राग और आग दोनों ही उसके अपने एन.टी.पी.सी. हैं। वह संगम की रागात्मकता को पोर-पोर से महसूस करता है और कहता है-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गंगा-जमुना की लहरों का
आँखों में संगम
खोल रहा है कौन न जाने
यादों का अलबम
याद करो जब तुमसे मिलने
पहली बार गया था
नया नया रिश्ता था अपना
पुल भी नया नया था
खूब घना कोहरा था उस दिन
सूरज था मद्धम

श्लेष उसी घने कोहरे को अपने सृजनात्मक सूरज के मद्धम आलोक से तार-तार कर रहा है। यह हम सबके लिए अनिर्वचनीय सी बात है जो उसके पिता के नेपथ्य में जाने के बाद से उसकी रचनात्मक यात्रा के विस्मयकारी विकास के मौन साक्षी रहे हैं।

उसके सामाजिक और मानवीय सरोकार तो और भी अद्भुत एवं अप्रतिम हैं। वह गहरी बेकली के साथ यह पंक्तियाँ लिखता है-

नदियों को आ रहा पसीना
बादल की मक्कारी पर
हँसी आ रही लाल किले को
दिल्ली की तैयारी पर
'खेल' हुए सब फेल तुम्हारे आगे
यह सच्चाई है
रिश्वत के गद्दों के नीचे
धोखे भरी चटाई है
दुर्योधन को फिर यक़ीन है
इस युग की ग़ान्धारी पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निश्चित ही 'चाँद सुलगता है' के गीत-नवगीत आपको भी अपनी आँच से अभिभूत करेंगे। चाँद का सुलगना आपके सम्वेदन को भी पास से आकर छुएगा। ऐसा पक्का भरोसा और गहरा विश्वास है। आमीन! आमीन!! आमीन!!!

–यश मालवीय
'रामेश्वरम्'
ए-111 मेंहदौरी कालोनी
इलाहाबाद-211004
(उ०प्र०)

दि०–5 दिसम्बर, 2011

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपनी बात

प्रिय पाठकों यह कविता संग्रह आपके सुरक्षित हाथों में सौंपते हुए खुशी और दर्द दोनों एक साथ महसूस कर रहा हूँ। खुशी इसलिए कि अभी तक जो क़ाव्य मंचों या पत्र-पत्रिकाओं के ज़रिये टुकड़ों में आप तक पहुँच रहा था उसे सहेज-समेट कर समग्र रूप में आप तक पहुँचा रहा हूँ और दर्द इसलिए कि इस पुस्तक या इन कविताओं की पृष्ठभूमि बार-बार पिता के देहावसान व दुखद स्मृतियों की ओर खींच ले जाती है। वैसे तो लिखने-पढ़ने छपने-छपाने की शुरुआत बहुत पहले आदरणीय रवीन्द्र कालिया जी (संपादक : नया ज्ञानोदय) द्वारा संपादित गंगा-यमुना अखबार से हो गई थी, पर पढ़ाई-लिखाई और तमाम व्यस्तताओं के कारण लिखना-पढ़ना एक निजी डायरी तक सीमित होकर रह गया था।

बहरहाल, मैं चाहूँगा मेरी 'लेखनी की कॉपी' मेरी रचनात्मकता को देखते हुए जँचे न कि किसी अन्य संदर्भ से। 'चाँद सुलगता है', सचमुच ऐसा भी वक़्त आता है जब सारे प्रतिमान और संदर्भ अपने व्यवहार और मूल संस्कार से कटे-बंटे से प्रतीत होने लगते हैं। उस समय की पीड़ा ही शायद कविता बनकर हृदय से फूटती है। यह पीड़ा निजी और सामाजिक दोनों स्तरों पर आपको झकझोरती है। बहरहाल कोशिश ये है कि इन कविताओं के माध्यम से आज के हालात उपजी विद्रूपताएँ, विसंगतियाँ और उसमें फँसे और जूझते हम और आप जैसे लोग कहाँ तक उम्मीद बाँधे रह सकते हैं या क्या सकारात्मक पहल कर सकते हैं को अभिव्यक्ति दी जाए। साथ ही साथ कुछ कविताएँ प्रेम के संदर्भों को जीती हुई भी हैं। ये कविताएँ दुःख-दर्द, हँसी-खुशी, आशा-निराशा आदि तमाम भावों को लेकर आपसे संवाद करेंगी, और सार्थकता से करेंगी ऐसा मेरा विश्वास है।

ये तो हुई मेरी बात पर ये अधूरी रह जायेगी बिना कुछ संदर्भों को उल्लेखित किये। बहुत आभारी हूँ कि इस पुस्तक के लिए पद्मभूषण गोपाल दास नीरज जी ने कविताएँ सुनी-पढ़ी और अपना मत व्यक्त किया, साथ ही प्रो० अशोक चक्रधर और प्रोफेसर सोम ठाकुर जैसे विख्यात रचनाकारों ने दो-शब्द लिखें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अग्रज गीतकार, सर्वप्रिय श्री यश मालवीय जी ने शब्द-शब्द सहेजते हुए एक भूमिकापरक आलेख लिखा। प्रो० अजय जेतली ने रेखा चित्र का सहयोग किया, भाई कमल किशोर ने पिता की जीवंत तस्वीर का सहयोग प्रदान किया। लोकधर्मी व नाट्यविद् भाई अतुल यदुवंशी को विशेष धन्यवाद मुझे लोक संदर्भों की ओर प्रेरित करने के लिए। बहुत आभारी हूँ उन संपादकों, साहित्यकारों और पत्रकारों का जिन्होंने इन कविताओं को समय-समय पर छापा, सराहा और मुझे संबल प्रदान किया। पाण्डुलिपि और प्रूफ में हमारी धर्मपत्नी प्रमिला राय और मित्रों अनुराग अरोरा, सन्तोष सिंह एडवोकेट, शमीम रज़ा और कवि मित्र भाई रविनंदन सिंह का विशेष सहयोग रहा। बहुत आभारी हूँ हिन्दुस्तानी एकेडेमी और विशेष रूप से श्री अशोक घोष (कार्यकारी अध्यक्ष, हि०ए०) व श्री बृजेश चन्द्र (कार्यकारी सचिव हि०ए०) का जिनके सहयोग के बिना यह प्रकाशन संभव नहीं था। संभावनाओं और उम्मीदों के साथ बस इतना ही।

श्लेष गौतम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुक्रम

- चाँद सुलगता है 19
- गीत हमेशा साथ रहा है 21
- भीतर सौ हथियार लिए 23
- माँ 25
- क़ीमत की आरी है 26
- नाटक नहीं कुबूल 27
- अफसोस भगत सिंह 29
- वरना बिल्ली बड़ी सयानी 30
- सबके मुँह पर ताला 31
- बहे ये फिर से नीर 32
- हमने वृन्दावन में 33
- बड़बोले संवादों से हम हार गए 34
- वादों की बारिश 35
- सूखती झीलों की 36
- बिटिया नहीं मिलेगी 37
- कुर्सी उनकी बोली उनकी 38
- अगर मगर और पर में 39
- इस युग की गांधारी पर 40
- सच का जाप 42
- सिंदूर का सपना था 43

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

- ढाई आखर की झीलों पर 44
- पाँव मगर नंगे 45
- चूहों ने कुतरा 46
- सब कुछ फिसल गया 47
- यादों की बारिश 48
- आँखें बंद किये 49
- आगे हैं प्यादे 50
- दस्तक देता है 51
- चीखती प्रथाएँ 52
- लोग फैलते जाते हैं 53
- पापा 54
- दर्पण का योग है 55
- कौसर बी 56
- वक़्त की पटरी पर 57
- तारे भी टूट गये 58
- तुमको देख के 59
- अर्थ उठकर रो रहे हैं 60
- पूरी ग़ज़ल हुए 61
- पल में पचमढ़ी 62
- टूट रहे पत्ते ने पूछा 64
- संवाद बहुरंगी हुए 65
- कविताएँ तो करती हैं संवाद 66
- कई दोगले बैठे हैं 67
- बिग बाज़ार यह देश हुआ 68
- हमारा कोई नाम नहीं 69

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

- रिश्ते कच्चे हुए दोस्तों 70
- अपने-अपने तम्बू हैं 71
- कान्हा का वृन्दावन 72
- तुमसे जुड़ना मुश्किल है 73
- लोग खाली जी रहे हैं 74
- मिट्टी से भाग रहे 75
- इतिहास बनाना है 76
- कुछ बोलो आज़ाद 78
- इतने काँटे हैं 80
- कागज़ी उजाले हैं 82
- शेर देखो सो रहा है 83
- खूब रही 84
- रणभूमि में अर्जुन 85
- सरकारी दामाद 86
- चीनी है कम 88
- बोलो कैसे गीत लिखूँ 89
- लक्ष्मण रेखा 90
- दस्तावेजों में मंगल है 91
- आवाज़ों की साजिश 92
- बिल्कुल नई कलम से 93
- कलेजा फट रहा है 94
- गाँव की राधा 95
- सोच रहा हूँ मैं 96
- उम्मीदों की पगडण्डी 97
- गुब्बारे सी खुशी 98

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

❒ दीप जलाना होगा 99

❒ कोहरे चादर तान रहे 100

❒ आँखों में संगम 101

❒ घर भी कब्रिस्तान लगता है 103

❒ कोई सेंटाक्लाज नहीं 104

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चाँद सुलगता है

नई–नई तक़लीफों में
दिन रोज़ गुज़रता है
सूख रहे ज़ख्मों को
चूहा रोज़ कुतरता है

सुबह–सुबह ही उम्मीदों का
सूरज डूबा है
मेरा स्वागत कैसे हो
सो नया अजूबा है
मेरे घर के ऊपर ही
क्यूँ चाँद सुलगता है

सन्नाटे में चीख बराबर
गूँजती रहती है
बरसों सोई किस्मत दिनभर
ऊँघती रहती है
सूनी आँखों से सागर
भरपूर उतरता है
मंगल गीत उदासी के
कपड़ों में आये हैं
नये पुरोहित भूत–प्रेत
के सपने लाये हैं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इच्छाओं को डँसने
काला नाग उभरता है
चिथड़ों में लिपटी मर्यादा
थर-थर काँपती है
दो कौड़ी की बहस मूल्य की
कॉपी जाँचती है
स्थायी अवसाद जहाँ हो
कौन उबरता है

सूख की कोई किरन नहीं
बस आँधी-पानी है
रोज़ हवा रुख बदल रही
कैसी मनमानी है
मौसम भी वादा करके
हर बार मुकरता है

❐

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गीत हमेशा साथ रहा है

गीत हमेशा साथ रहा है
मन में बसता है
दाँव पेंच की सड़क नहीं
ये सीधा रस्ता है

गीत हमारा संस्कार है
गीत ही गहना है
खुली किताब है, नहीं आवरण
इसने पहना है
उसको भी सहलाता है,
जो इसको डँसता है

नाव-नदी जंगल, घाटी
पर्वत है गीतों में
गूँज रहा ये घर-बाहर
महफिल संगीतों में
कोई नहीं अछूता इससे
ऐसा दस्ता है
तीन-पाँच से दूर रहा
पर नो दौ ग्यारह नहीं हुआ
तरह-तरह के लालीपॉप थे
फिर भी देखो नहीं चुआ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मन में कोई चोर नहीं
ये खुलकर हँसता है

कितनों ने छोड़ा अपनाया
फिर भी सबका है
ग़ौर से देखो साथ में इसके
पूरा तबका है
उसका साथ भी देता है
जो ताने कसता है

दर्द गीत में खुशी गीत में
कही और अनकही गीत में
गागर में सागर के जैसी
बातें हरदम रही गीत में
सचमुच हर रस मिला यहाँ
ख़ारिज एक रस्ता है

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भीतर सौ हथियार लिए

हँस-हँस कर मिलते हैं
मन में लाखों खार लिए
मुँह पर अच्छा-अच्छा
भीतर सौ हथियार लिए

फूटी आँखों नहीं सुहाते
हाथ गले में डाले हैं
हँसी-ठिठोली देख के लगता
जैसे जीजा साले हैं
नकली मुस्कानों संग मिलते
झूठा प्यार लिए

ख़ुद भटके हैं पर अगले का
रस्ता काटेंगे
जमकर कान भरेंगे सबके
ज़हर ये बाटेंगे
काँटों की सेज बिछाते हैं
फूलों का हार लिए
इसके हैं उसके हैं किसके हैं
कहना मुश्किल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

थाली के बैगन हैं
एक जगह रहना मुश्किल
ताक में हरदम रहते हैं
चाकू तलवार लिए

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'माँ'

शब्दों की अपनी सीमा है, कैसे व्यक्त करुँ
माँ तुमको पूरा-पूरा कैसे अभिव्यक्त करुँ
धूप में तुम छाया होती हो
बारिश में छाता
हो कोई भी मौसम तुमसे
जीन नहीं पाता
यादों के जंगल में ख़ुद को कैसे सख़्त करुँ
सब कुछ गुपचुप सह लेती हो
कुछ ना कहती हो
घर के हर सुख-दुख में
आगे-आगे रहती हो
हँसी-खुशी सुख-दुख के आँसू कैसे ज़ब्त करुँ
अब भी शायद यहीं कहीं हो
आती जाती हो
उम्मीदों क़ा दीपक घर में
रोज़ जलाती हो
बनी रहे ये आस तो, देहरी को आश्वस्त करुँ

❒

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क़ीमत की आरी है

उम्मीदों की दीपशिखा पर मँहगाई भारी है
त्यौहारों के तन पर बढ़ती क़ीमत की आरी है
लाई-लावा-खील बताशे
आसमान को छूते हैं
ग़ुरबत के काँटों की सड़क पर
फटेहाल से जूते हैं
टीबी, प्लेग, चिकनगुनिया से बढ़कर बीमारी है
दीया नहीं है तेल नहीं है
सूखी सूखी बाती है
महलों की पर चकाचौंध
होरी का ख़ून जलाती है
राजघाट के सपनों से यह कैसी गद्दारी है
खीर-मिठाई ज़ेवर, कपड़े
अब तो 'टेढ़ी खीर' हुई
मँहगाई के बीच दीवाली
भारत में कश्मीर हुई
त्यौहारों पर मिली बधाई अब तीखी गारी है
अर्थ-अनर्थ की ओर चल पड़ा
सीले हुए पटाखे हैं
कैसे स्वाद मिलेगा हमको
भीगे सभी बताशे हैं
हत्थे से छुट गया कबीला कैसी सरदारी है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाटक नहीं कुबूल

घड़ियालों के हाथ में बापू
        है अनशन का फूल
सद्भावों का ख़ून हुआ था
        कैसे जाऊँ भूल
धरती तेरी चित्र भी तेरा
        फिर भी अजब तमाशे हैं
बैठा है अनशन पर लेकिन
        पेट में सौ-सौ लाशे हैं
उजियारे में झोंक रहा
        देखो आँखों में धूल
गला काटनेवाले सुना है बापू
        सूत को काटेंगे
सत्य अहिंसा के ख़ूनी अब
        प्यार का पर्चा बाटेंगे
आम की प्रत्याशा है लेकिन
        बोते रहे बबूल
राजधर्म की कब्र दब गयी है,
        विकास के पत्थर से
काली करतूतों का लेखा'
        लिखा सुनहरे अक्षर से
रह-रह कर है टीस उभरती
        चुभता समय का शूल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संत फकीरों की यह माटी
ज़ार-ज़ार अब रोती है
नैतिकता के बदन पे बापू
चिथड़ी फटी लंगोटी है
कोई कुछ भी कहे मुझे ये
नाटक नहीं कुबूल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अफसोस भगत सिंह......

अंधियारे की अगुवाई में
मुल्क हुआ अंधा
अफसोस भगत सिंह तुम्हें नहीं
हम दे पाये कंधा
मतलब पड़ने पर ही तुमको
याद किया जाता है
टुकड़ों में ख़ेमों में बँटकर
नांम लिया जाता है
बजबजाती गलियों का
नाम पड़ा रजनीगंधा

राजगुरु सुखदेव सरीखे
मित्र तुम्हारे थे
तभी तो तुमने आज़ादी के
चित्र उभारे थे
मुल्क–मित्रता–मूल्य हुए
सब आज महज धन्धा

❐

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वरना बिल्ली बड़ी सयानी

वही है राजा वहीं है रानी
जनता भी है वही पुरानी
सोच कुंद बदलाव है मुश्किल
घिसी-पिटी फिर वही कहानी
रोज़-रोज़ का रोना गाना
करम नदारत भाग्य बहाना
मंज़र बीते सालों वाले
कहीं है सूखा कहीं है पानी
अजब तमाशा अजब राज है
चुप्पी साधे हुए ताज है
आँखे फूटी कान बंद है
बोल गए तो गलत बयानी
आस-पास सब घेर रहे हैं
सुर विरोध का टेर रहे हैं
हमीं बेखबर सोये-सोये
होगी कैसे शाम सुहानी
उठो खड़े हो जाग भी जाओ
एक नया इतिहास बनाओ
शेर बनोगे तभी बचोगे
वरना बिल्ली बड़ी सयानी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सबके मुँह पर ताला है

गुट के भीतर गुट है भाई
तगड़ी खेमेबाजी है
कविता है नेपथ्य में आगे
बस कोरी लफ्फाजी है
कोई है अज्ञेय यहाँ पर
कोई पन्त निराला है
सच्चाई सब जान रहे पर
सबके मुँह पर ताला है
अच्छों की हालत मत पूछो
रह-रह आँसू पोंछ रहे
कविता ज़िंदा लाश हुई है
गिद्ध भेड़िये नोंच रहे
मंचों पर हो रहा तमाशा
कूड़ा करकट जारी है
हंसों की संख्या सीमित है
कौवे उन पर भारी हैं
लपट-झपट और गणित बिठानेवाले
मालामाल हुए
नये दौर में कलम पूजनेवाले
खस्ताहाल हुए

❑

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'बहे ये फिर से नीर'

हिलते डुलते ताजमहल की
देखी जब तस्वीर
याद बहुत आई यमुना जी
शाहजहाँ की पीर
शाहजहाँ को कैदं किया था
उसके शहज़ादे ने
तुमको भी तो दर्द दिया है
बस कोरे वादे ने
सोच में हूँ मैं सहोगी कब तक
और धरोगी धीर
ताजमहल में खामोशी से
एक सल्तनत सोई है
वहीं किनारे पर तू भी तो
गुमसुम खोई-खोई है
दुआ यही है कल-कल करता
बहे ये फिर से नीर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमने वृन्दावन में

राधा कृष्ण की धारा देखी
हमने वृन्दावन में
अमर प्रेम की अमर कहानी
यमुना के कण-कण में
धूप-हवा-खुशबू-कंकर-पत्थर
सब राधे-राधे
बिना राधा के बृज में लगते
कृष्ण भी आधे-आधे
रूह की गहराई तक ये
महसूस किया हर क्षण में
हँसी खुशी उत्सव उल्लास में
डूबे सबको देखा
बात बात में राधे-राधे
कहते सबको देखा
झील-नदी-पर्वत-रस्ते, संग
मोर नाचते वन में
घाट किनारे स्वर लहरी पर
बृज को झूमते देखा
राधे-राधे कहकर बृज की
रज को चूमते देखा
दीपक की चुनरी ओढ़े
यमुना मुस्क़ातीं मन में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'बड़बोले संवादों से हम हार गए'

विस्फोटों से आहत होते,
वादों से हम हार गए
दिल्ली तेरे बड़बोले
संवादों से हम हार गए
ख़ून नहीं दिखता है तुझको
मौत नहीं दिखती है
जीवन की पटरी पे दौड़ती
सौत नहीं दिखती है
ख़ून बहानेवालों को
आदाबों से हम हार गए
नियम और कानून शिथिल हैं
कुंद हो गई सोच
पानी नाक के ऊपर पहुँचा
अब कैसा संकोच
सच्चाई से दूर रेशमी
ख्वाबों से हम हार गए
ख़ुद को हमें बदलना होगा
वो तो घात करेंगे
उनसे उनकी ही भाषा में
अब हम बात करेंगे
कोई नहीं कहेगा फिर इन
नागों से हम हार गए

❐

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'वादों की बारिश'

वादों की बारिश में भीगे
न्यौते आयेंगे
हमको फिर झूठी उम्मीदों
से नहलायेंगे
कुछ नहीं हुआ, फिर भी होने का
डंका पीटेंगे
जैसे जीतते आए है दिल,
वैसे जीतेंगे
हमीं ग़लत होते हैं हरदम
ये समझायेंगे
इन्हें सदन में जाते ही
कुछ याद नहीं रहता
सच है यही कि, सालों फिर
संवाद नहीं रहता
वोटों के मौसम में लेकिन,
घर–घर जायेंगे
इनका छोड़ो अपनी सोचो
हम क्या करते हैं
इनके फेंके पासे पर हम
ख़ुद मर मिटते हैं
इन्हें ग़लत ठहरा ख़ुद को
कब तक बहलायेंगे

❐

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सूखती झीलों की

मत पूछो हमसे सच्चाई
सूखती झीलों की
'फाईल' में जो दिखी लबालब
हैं तहसीलों की
खाद नहीं है, बीज नहीं है
पानी का भी टोटा है
खेत हो रहे रेत दिनोंदिन
मँहगाई का सोटा है
पगडण्डी का पता नहीं पर
योजना मीलों की
हरियाली का गला घोंटते
मिल और भट्टे हैं
देशी दारू का अड्डा
लहराते कट्टे हैं
हंसों की ताकत पर हावी
सत्ता चीलों की
रामराज का सपना भी
सपनों में नहीं रहा
अपने कुल का दीपक भी
अपनों में नहीं रहा
नंगे पाँव को सौगाते हैं
चुभती कीलों की

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'बिटिया नहीं मिलेगी'

उम्मीदों का गला घोंट कर
क्या आगे बढ़ पाओगे
आज नहीं चेते जो 'बच्चू'
फिर आगे पछताओगे
मीरा-मरियम-राधा-सीता
रज़िया नहीं मिलेंगी
आनेवाली नस्लों को फिर
बिटिया नहीं मिलेंगी
ये इतिहास हुईं तो फिर, तुम भी
इतिहास हो जाओगे
कोख को कब्रिस्तान बनाना
कैसा भला जुनून है ये
देह की हत्या नहीं है केवल
अरमानों का ख़ून है ये
पूछ रहीं 'आधी आबादी',
कितना और सताओगे
प्यारे-प्यारे, मीठे-मीठे
रिश्ते नहीं रहेंगे
मन को छूते संबंधों के
किस्से नहीं रहेंगे
भाभी-बुआ-चाची-नानी-दादी
किसे बुलाओगे

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुर्सी उनकी बोली उनकी

कुर्सी उनकी बोली उनकी
बारूदों संग गोली उनकी
जनता की परवाह कहाँ है
कायम हँसी ठिठोली उनकी
इन्हें पता है क्या करना है
बस अपनी जेबें भरना है
जहाँ जो मिले 'चट' करना है
जनहित की पर बात जब आये
वहाँ है खाली झोली उनकी
लूट-पाट गुंडई कराते
इसको उसको खेत कराते
हमको आपस में लड़वाते
सांसत में जनता बेचारी
घूम रही है टोली उनकी
दंगाई भी इनके दल के
बलवा-ख़ून भी इनके बल पे
भेद करातें चालें चल के
जगह-जगह विस्फोट कराते
यही दीवाली होली उनकी

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अगर–मगर और पर में

दस दरवाज़े बीस खिड़कियाँ
तीन मंज़िले घर में
एक भी कुंडी खुली नहीं है
जाने हैं किस डर में
भला बताओ हवा है ताज़ी
कैसे पहचानोगे
हिलता पत्ता तुम्हें दिखा जो
भूत समझ भागोगे
खिड़की के संग आँखे खोलो
बात घुसाओ सर में
नई लकीरें खींचो कब तक
पहले की पीटोगे
बदला–बदला हवा का रुख है
कैसे अब जीतोगे
उलझे रहा सदा तुम यूँ ही
अगर–मगर और पर में
देखो कहाँ से कहाँ आ गयी
ये 'आधी आबादी'
आसमान को चूम रही
इनकी जश्ने–आज़ादी
साथ चलो ये जान चलो
कुछ धरा नहीं अंतर में

❐

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस युग की गांधारी पर

नदियों को आ रहा पसीना
बादल की मक्कारी पर
हँसी आ रही लाल किले को
दिल्ली की तैय्यारी पर
कैसी अंधी दौड़ है भाई
जगमग जगमग रस्ते हैं
'मेन सड़क' के पीछे रहने वाले
मगर तरसते हैं
देर–सबेर उठेंगी बातें
ऐसी कारगुज़ारी पर
दिल्ली तरसी एक दिये को
तुम मशाल को ले आये
दो कौड़ी की चीज़ों का तुम
कई करोड़ों दे आये
अरबों का बिल आया देखो
बग्घी और सवारी पर
'खेल' हुए सब फेल तुम्हारे आगे
यह सच्चाई है
रिश्वत के गद्दों के नीचे
धोखे भरी चटाई है
दुर्योधन को फिर यक़ीन है
इस युग की गांधारी पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाने क्यूँ लगता है ऐसा
तुम पर गाज गिरेगी
समय तिथि का पता नहीं कब
कल या आज गिरेगी
दिल कहता है तुम जाओगे
अब लंबी पारी पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सच का जाप

करना है इंसाफ अगर
सच्चा इंसाफ करो
अपने भीतर की काई
तुम पहले साफ करो
कुछ कहते हैं होंठ तुम्हारे
आँखे कुछ कहती हैं
सच्चाई से दूर हैं कोसो
चुगली में रहती हैं
बहुत हुआ ये मन्त्र-वन्त्र
अब सच का जाप करो
मन की उजली पूँजी को
तुमने बेकार किया
इच्छाओं की 'गुणा-गणित' का
ही व्यापार किया
चले कहाँ से, कहाँ आ गए
कुछ एहसास करो

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिंदूर का सपना था

बिन ब्याही थी, पेट से थी
तय उसका मरना था
उसकी आँखों में शायद
सिंदूर का सपना था
इक ग़रीब की कुटिया की
वह राजदुलारी थी
गहरी नींव थी महलों की
वह कच्ची क्यारी थी
नहीं समझ पाई सच्चाई
उसे भटकना था
मन में कोई फाँस नहीं थी
भोली-भाली थी
नीयत तो उजली थी लेकिन
किस्मत काली थी
जिसके हाथों जान गई
वो उसका अपना था

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ढाई आखर की झीलों पर

गहरे भीतर अन्तर्मन को
छूकर कौन गया
यादों की इस दीपशिखा तक
आकर कौन गया
संवादों का, अनुवादों का
ताजा कमल खिला
चाँद हमारे ख्वाबों में जब
हँसता हुआ मिला
मन की वीणा पे अपना स्वर
देकर कौन गया
किश्तों में बातें होती थीं,
रातें कटती थीं,
'हिरना-आँखें' सांझ-सबेरे
बन में खटती थीं
नींद हमारी, चैन हमारा
लेकर कौन गया
हरियाली थी, खुशबु थी
हर रंग सुनहरा था
'ढाई आखर' की झीलों पर
पलक का पहरा था
मीठी छुवन की नौकाओं को
खेकर कौन गया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाँव मगर नंगे

शीशे की किरचे हैं
पाँव मगर नंगे
चाँद आया ख्वाब में
वो भी बेढंगे
काबिलियत बैठी है
आस के सहारे
नदियों को लील गये
उसके किनारे
घुटनों के बल देखे
लोग भले चंगे
गाँवों को भूल गए
शहरों के चक्कर में
हम भी बाज़ार हुए
अंधी इस टक्कर में
'ग्लोबल' की दौड़ में
हुए भिखमंगे
चूहों से हार रही
'शेर' हुयी बिल्ली
कोरे बयानों की
भेंट चढ़ी दिल्ली
चुप्पी पर भारी हैं
बारूदी पंगे

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चूहों ने कुतरा

खिला-खिला मौसम है
चेहरा है उतरा
ख्वाबों की रोटियों को
चूहों ने कुतरा
इसी बरस 'माता जी'
चौंसठ के पार गईं
गोरों से जीत गईं
कालों से हार गईं
जगमगाता 'राजपथ',
'जनपथ' पे कुहरा
घर का धन लूट रहे,
चोरों में राजा है
आज़ादी के मुँह पर
कर्रा तमाचा है
सूरज खुशहाली का
कोने में पसरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सब कुछ फिसल गया

सब कुछ अच्छा खासा था
पल भर में बदल गया
घूम रहा बरसों से पहिया
औंचक संभल गया
निर्वासित यादें जंगल में
रोती हुई मिलीं
भाग जगाने पहुँची किरणें
सोती हुई मिलीं
'रेत भरी मुट्ठी' के जैसा
सब कुछ फिसल गया
पुर-सुकून था, खुशहाली थी
कोई कमी नहीं थी
साँसों के रस्ते पर, ग़म की
काई जमी नहीं थी
अंधियारों से हाथ मिला कर
सूरज निकल गया

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यादों की बारिश

यादों की बारिश से
दूर हुई दूरी,
पोर-पोर भीगी हैं
शामें सिन्दूरी
छिटकी है चाँदनी
चेहरे के ऊपर
भाग गया कोई
भीतर से छूकर
रह गईं कहने को,
बातें ज़रूरी
साँसों से गले मिलीं
मौसमी हवाएँ
खुशबु सी फैल गईं
पावन ऋचाएँ
सोच में ही घूम आये,
शिमला, मसूरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आँखें बन्द किये

नई दिशाएं ढूढ़ रहे हैं
आँखें बन्द किये
पर उपदेश कुशल बहुतेरे
सौ–सौ द्वन्द लिये
गई सदी में उलझे रहते
बिन समझे, बिन जाने
धुआँ–धुआं सिद्धान्त हुए
पर बनते बड़े सयाने
माटी अच्छी, बाती अच्छी
खाली मगर दिये
धूल–फूल में अन्तर पूछो
इनको नहीं पता
हरियाली के बीच हुए ये,
सूखी हुई लता
ख़ुद का कुछ भी रहा नहीं
टुकड़ों पर सदा जिये

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आगे हैं प्यादे

मुश्किल है भाँपना
मौसमी इरादे
राजा से चार हाथ
आगे हैं प्यादे
आँखों की किरकिरी हुई है
माथे की बिंदी
संविधान के पन्नों में जैसे
खोई हिंदी
काजल के साथ गए
आँखों में बुरादे
शतरंजी चालें चलते हैं
घात लगाते हैं
आग लगाते हैं पहले फिर
आग बुझाते हैं
भोले से भाले हुए
लोग सीधे-साधे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दस्तक देता है

कौन है जो,
सपनों में आकर
दस्तक देता है,
जब तक मैं,
ना उठ जाऊँ,
वो तब तक देता है
आँख खोलते ही ग़ायब
हो जाते हैं सपने
होंठ काँपने लगते हैं
तन लगता है तपने
बह रहे पसीने की गवाही,
ये मस्तक देता है
शिकवा-गिला नहीं कोई से
ना कोई अफसोस हुआ
कुहरे की चादर पर गिरकर
अपना सपना ओस हुआ
कौन यहाँ पर साथ
किसी का
कब तक देता है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चीखती प्रथाएँ

मौसम है नागफनी
आतिशी हवाएँ
कानों में गूँज रहीं
मौत की ऋचाएँ
विस्थापित सच्चाई
काल के हवाले
पेड़ों के वास्ते
पौध के निवाले
सूखे से छल करतीं
काली घटाएँ
जहरीले नाग हुए
साँपों के देवता
पापों के पंच हुए
'खापों' के देवता
साँसों के सीने पर
चीखती प्रथाएँ
फूलों पर कलियों पर
काँटों का पहरा
बढ़ती लताओं पर
ख़तरा है गहरा
माली है साज़िश में
बाग कहाँ जाएँ

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोग फैलते जाते हैं

लोग फैलते जाते हैं
उठने के चक्कर में
पूरे नमक का सौदा करते
थोड़ी शक्कर में
कुछ टुकड़ों की खातिर ही
कालीन हुए जाते हैं
भीतर की आवाज़ दबाये
होंठ सिये जाते हैं
कल के सोने की गिनती
अब टीन कनस्तर में
दो नंबर हर जगह है हावी
एक की हालत पतली है
लूट मचाते घड़ियालों में
फँसी बिचारी मछली है
जाने कैसी प्रथा चली है
घर, बाहर, दफ्तर में
किसे कहें रखवाला, हम
किस पर विश्वास करें
कोई तुला ले आओ जिस पर
टूटती आस धरें
सच्चा एक सिपाही मुश्किल
लाखों के लश्कर में

❑

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'पापा'

रुका नहीं कुछ सुई घड़ी की
अब भी सरकती है
लेकिन 'पापा' कमी तुम्हारी
रोज़ अखरती है
काँटे चुभते हैं पाँवों में
दर्द भी होता है
याद का मरहम बेबस
पुक्का फाड़ के रोता है
दुख का सागर मीन अकेली
ख़ूब तड़पती है
टोका-टाकी कहना-सुनना
सब कुछ छूट गया
हँस-हँस हमें मनानेवाला
हमसे रूठ गया.
सूखा सोता मन का
आँखे खूब बरसती हैं
अंधियारा हावी होने की
कोशिश करता है
उम्मीदों का जुगनू घुट-घुट
जीता मरता है
नई-नई स्थितियाँ हमको
रोज़ परखती हैं

❐

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दर्पण का योग है

कोशिश है अच्छी, अच्छा संजोग है
कैमरे के सामने दर्पण का योग है
लेन्स है नया-नया
चेहरे पुराने
लौट आये हँसते हुए
किस्से सुनाने
यूँ ही सब ठीक नहीं, ख़ूब मनोयोग है
फोटो में खिंच आई
चिन्ता की रेखा
कैमरे को डाँट पड़ी
पहले नहीं देखा
सच्ची हैं तस्वीरें भीतर का रोग है
कागज़ के टुकड़ों में
जीवन की धारा
हँसता हुआ चेहरा नहीं
लौटा दुबारा
जादू है टोना है, जोगी का जोग है
एक सनद जैसी है
आज की तस्वीर
सच्चाई दिखलाती
दिखलाती पीर
यही एक सीधा सा उस पर अभियोग है

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कौसर बी

कहाँ गई हो कौसर बी
बहुत दिनों से नहीं दिखी
शासन में अपनी गिनती है
केवल बकरी भेड़ में
हम यूँ ही मर खप जाते हैं
बस फ़र्ज़ी मुठभेड़ में
ऊपरवाला हैरानी में
किसने ये तकदीर लिखी
राजधर्म बस कागज़ पर है
ये बर्बर नाकारा हैं
माल काटकर खुश रहते हैं
सूरत से 'बंजारा' हैं
मासूमों की जान पे आफत
चीख तो है पर दबी-दबी
कब से देखो जाँच रुकी है
कहाँ कोई गुंजाइश है
खोजबीन के नाम पे धोखा
केवल तेरह-बाईस है
न्यायालय से शायद कुछ हो
बची-खुची उम्मीद वही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वक़्त की पटरी पर....

वक़्त की पटरी पर यादों की
रेल गुज़रती है
दूर कहीं इक धुंधली सी
तस्वीर उभरती है

कुछ-कुछ याद रहा बाकी सब
पीछे छूट गया
सात जनम का वादा कुछ मिनटों
में टूट गया
यादों की रस्सी चुहिया
इस कदर कुतरती है

हँसी-खुशी वाले मौसम
पिन जैसे चुभते हैं
मन की टीस बढ़ानेवाले
जंगल उगते हैं
दर्द की बरछी आरपार
भरपूर उतरती है
बातों ही बातों में कोई
बात हुई होगी
जाने अनजाने वह ही
आघात हुई होगी
इतनी बिगड़ी बात भला
क्या खाक सुधरती है

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तारे भी टूट गये

सूरज डूबा चाँद छिपा तारे भी टूट गये
नेह का ब्रन्धन बना रहा पर देह के छूट गये
घर सूना आँगन सूना
दीवारें रोती हैं
ग़म की लहरें उछल-उछल कर
रोज़ भिगोती हैं
वक़्त हुआ बेरहम लुटेरे सब कुछ लूट गये
ज़ख्म भले हो गया पुराना
अब तक नहीं भरा
यादों ने ऐसा सींचा कि
अब भी हरा-भरा
छिली जीभ पर जैसे गरम मसाले कूट गये
आवाज़ें हैं घनी-घनी पर
खाली गगरी है
तुम नेपथ्य में गये हो जब से
अफरा-तफरी है
गया काफिला दायें तो बायें सब ऊँट गये

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुम को देख के---

तुमको देख के मन
पंछी सा उड़ने लगता है
सुबह-शाम की आपाधापी
ऊपर से मच-मच
ठूँठ जड़ें चैतन्य हो जातीं
सोलह आने सच
एक नये विस्तार से ये मन
जुड़ने लगता है

दिन में भी सपने आते हैं
हलचल होती है
एक नई जिज्ञासा सोच में
पल-पल होती है
अनजानी गलियों में
सबकुछ मुड़ने लगता है

नये-नये सन्देश हवाएँ
हमें सुनाती हैं
नया खिलाड़ी जान के
मौका ख़ूब भुनाती है
हरा-भरा हमें देख के
काँटा कुढ़ने लगता है

❑

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्थ उठकर रो रहे हैं

अर्थ उठकर रो रहे हैं
स्वर हवा में खो रहे हैं
शब्द भी नेपथ्य में हैं
व्याकरण भी सो रहे हैं
छन्द खेमों में बँटा है
तुक मिलाने में जुटा है
आयातित टोटके बहुत हैं
मूल से लेकिन कटा है
काव्य जैसे बहती गंगा
हाथ जमकर धो रहे हैं
रस अकेले पड़ गये हैं
काल जैसे सड़ गये हैं
दीर्घ-लघु का भेद गायब
मात्रा यूँ जड़ रहे हैं
ये सृजन के नाम पर
हम कैसा मैला ढो रहे हैं
दौर है अब मुक्तियों का
बेवजह की सूक्तियों का
ढेर-सा कूड़ा जमा है
अटपटी अभिव्यक्तियों का
सोच लो अब भी समय है
ठीक है जो बो रहे हैं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूरी ग़ज़ल हुए

प्रश्न जो अनसुलझे थे देखो
कितने सरल हुए
मन में कोई अलख जगी थी
बाँध रही घर की देहरी थी
भीतर-बाहर लगा हुआ था
एक इशारे की देरी थी
देख खुशी में तुमको नैना
सचमुच सजल हुए
बहुत दिनों तक बंद रहा सब
कुट्टी, मिल्ली, हारी
मन मयूर हो गया हमारा
सुनकर तेरा आरी
कितने बँधे कसे थे तुमको
छूकर तरल हुए
एक अधूरी प्यास लिए
हम कितना जिये मरे
बंद किवाड़ों में हम बाहर
बादल घिरे रहे
हम थे फूटकर शेर मगर अब
पूरी ग़ज़ल हुए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पल में पचमढ़ी

धूप सुहानी जाड़ों की, यादों की परत चढ़ी
पल में नैनीताल हुए हम पल में पचमढ़ी
सब कुछ इतना सिन्दूरी है
फिर क्यूँ दूरी है
अलग-अलग हैं तोता मैना
क्या मजबूरी है
साँसों में इक कोलाहल है, सागर आँखों में
बात जहाँ की तहाँ रह गई, आगे नहीं बढ़ी
कोयलिया अब भी गाती है
मोर नाचता है
मौसम तेरे छुअन की खुशबू
रोज़ बाँटता है
बाहर-भीतर उतराते हम रस में डूब गये
मीठी नीम की छौंके वाली जैसे नीम कढ़ी
भरे ताल दावते देते हैं
जी ललचाता है
तुम्हीं बताओ ऐसे में
कोई बच पाता है
हमने ख़ुद को बाँध लिया है तेरी यादों में
उतनी ही विद्या सीखी तुमसे जो मैंने पढ़ी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आते-जाते फूल क्यारी
ताने कसते हैं
कहते गुलशन से भौंरे
अब कटकर रहते हैं
हँसी उड़ाते हैं सब मेरी टाँग खींचते हैं
हवा मार के बढ़ जाती है सर पर एक तड़ी

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टूट रहे पत्ते ने पूछा

टूट रहे पत्ते ने पूछा, सूख रहे इक ताल से
कहाँ गई वो नई रोशनी
नई आज़ादी भईया
जोड़ घटा कर देख लिया
केवल बरबादी भईया
जाने कब खुशियाँ लौटेंगी बरसों की हड़ताल से
गोरे बेशक भाग गये
अब भूरों की मनमानी है
आदमखोरों की महफिल है
प्रेतों की जजमानी है
हैरत में है आज सभ्यता ऐसे इस्तेकबाल से
ख़ून पसीने की क़ीमत
अब दो कौड़ी की बातें
कोर्ट कचहरी में दिन बीता
थाने गुज़री रातें
हार के बुधवा कूद गया कुएँ में इस जंजाल से
सीधा–सादा नहीं रहा कुछ
सबकुछ टेढ़ा–मेढ़ा है
मक्कारों की फौज ने मिलकर
अभिमन्यु को घेरा है
आगे कुआँ पीछे खाई, हारा दोहरी चाल से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संवाद बहुरंगी हुए

फूल पत्ते घाटियाँ देखो तो एकरंगी हुए
चाँदनी भीगी हुई
वातावरण भीगा हुआ
दुधमुँहा बच्चा भी जैसे
व्याकरण सीखा हुआ
स्नेह का सागर मिला और स्वप्न सतरंगी हुए
कोंपले फूटी नहीं
पर फूल जैसे खिल गये
जेठ की दुश्वारियों में
बर्फ जैसे मिल गये
हारकर तत्क्षण सभी स्नेह अनुषंगी हुए
टूट कर बिखरे हुए
बादल जमा होने लगे
बरसों हम सोये रहे
उठकर रवाँ होने लगे
भाव में डूबे हुए हम आईना कंघी हुए
ओस की बूँदों में जैसे
तितलियों का रंग हो
लाचार कलियाँ क्या करें
जब आवरण ही तंग हो
शब्द साँसों में घुले संवाद बहुरंगी हुए

❑

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कविताएँ तो करती हैं संवाद

हुआ है कोई ना तो होगा, पिता तुम्हारे बाद
पल-पल तुमको याद कर रहा आज इलाहाबाद
कविता के कैलाश हो तुम
ये दुनिया कहती है
तुमको पढ़कर मन की सारी
पीर पिघलती है
नहीं हो तुम पर कविताएँ तो करती हैं संवाद
गाँव शहर जंगल पर्वत
आकाश बोलते हैं
धन्य हुए तेरे गीतों से
राज़ खोलते हैं -
छूटा देहं का घर लेकिन तुम और हुए आबाद
वो बेलौस हँसी-मस्ती
रिश्तों का अपनापन
जैसा भीतर वैसा बाहर
क्या दर्पण क्या मन
मन से बँधे रहे होकर हर बंधन से आज़ाद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कई दोगले बैठे हैं

एक मुखी रुद्राक्ष पहनकर कई दोगले बैठे हैं
भीतर से हैं रीढ़ खोखली बाहर से पर ऐंठे हैं
चेहरा झूठा भाव भी झूठा मुद्राएं भी झूठी हैं
कोरे बोल–वचन चालें सब, झूठी और अनूठी हैं
नीति वचन प्रवचन देने में आगे रहते हैं
'बाबा' हो या 'बॉबी' सबको साधे रहते हैं
इधर–उधर के काम सभी होते हैं ठेके पर
होती हो कानून व्यवस्था इनके ठेंगे पर
होटल, महफिल, राजभवन सब इनके अड्डे हैं
कहाँ नहीं मत पूछो इनके पाले पट्ठे हैं
बड़े–बड़े साहब इनके दरबार में आते हैं
भेंट चढ़ावा लाते इनका हुक्म बजाते हैं
सच पूछो तो ये दलाल हैं सत्ता शासन के
दाँव कृपा से ही अब तक बैठे सिंहासन पे
आगे बढ़ो हटाओ परदा असली सूरत देखो
पुण्य के खोल में लिपटी पाप की काली मूरत देखो

❐

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिग बाज़ार यह देश हुआ

बिग बाज़ार यह देश हुआ
हर चीज़ दुकानों में
गरिमा निष्ठा सच्चाई
बिक रहे सामानों में
नेह समर्पण से यारों
घर पहले बनता था
मिट्टी का हो लाख मगर
मन उसमें रमता था
रिश्तों की कच्ची नींव मिली
पक्के मकानों में

डोर नेह की टूट रही
अब बंधन नहीं रहा
नये दौर में चंदन भी
अब चंदन नहीं रहा
एक इकाई बँटी हुई छह
अलग घरानों में
सब्ज़ी रोटी दाल नहीं अब
साज़िश पकती है
गहरा था विश्वास जहाँ अब
शक की चलती है
बूढ़ों की गिनती कपड़ों सी
फटे पुरानों में

❐

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमारा कोई नाम नहीं

हम हैं केवल भीड़ हमारा कोई नाम नहीं
मौके पर जुट जाते हैं फिर कोई काम नहीं
कोई मर्ज़ी नहीं है अपनी
कोई चाह नहीं
बंद गली के रस्ते हैं हम
आगे राह नहीं
लू के तेज़ थपेड़े हैं बस भीगी शाम नहीं
गला भी है, मुँह भी है
लेकिन बोल नहीं सकते
उड़ना मना है इसीलिए
पर खोल नहीं सकते
सौ–सौ तकलीफें हैं लेकिन कोई 'बाम' नहीं
खड़ी फसल से कट जाते
वादों के मौसम में
धूल फाँकते हैं बरसों
नारों के अलबम में
सब कहते अनमोल हमारा कोई मोल नहीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रिश्ते कच्चे हुए दोस्तों----

रिश्ते कच्चे हुए दोस्तों
पक्के हुए मकान
बदली दुनिया गाँव की रोते
आज खेत खलिहान
टीवी, फ्रिज, स्कूटर, मोटरगाड़ी
बेशक आई
उम्मीदों के ट्रैक्टर के संग बैल की
हुई विदाई
नये-नये भट्टे, राईस मिल
डिग्री कालेज आये
अरमानों के पंख लगाकर
ऊँचे ख्वाब दिखाये
लेकिन इनके साथ ही भाई
कई बुराई आई
पानी, खेत, मेड़ को लेकर
होने लगी लड़ाई
घर-घर कोर्ट कचहरी की नौबत में
गाँव फँसे हैं
लालच के दलदल में ज़्यादातर के
पाँव धंसे हैं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपने-अपने तम्बू हैं

अपने-अपने गुट हैं सबके
अपने-अपने तंबू हैं
अपने-अपने अल्लाह सबके
अपने-अपने शंभू हैं
तरह-तरह के नाटक इनके
तरह-तरह के किस्से हैं
रटे-रटाये जुमले भी अब
मौलिकता के हिस्से हैं
मुश्किल है पहचान बताना
ऐसे भले स्वयंभू हैं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कान्हा का वृन्दावन

खुली हवा है खेत खुले हैं
खिले-खुले हैं मन
चौखट है दालान यहाँ है
खिला-खुला आँगन
सीधी-सी पगडण्डी जैसे
सीधे-साधे लोग
खुश रहते मेहनत करते
जो मिला सो छप्पन भोग
सच कहता हूँ गाँव लगे
कान्हा का वृन्दावन
छाँव घनी पीपल के पेड़ की
थकन मिटाती है
बरबस ही आजी-बब्बा की
याद दिलाती है
सहज-सलोने रिश्ते वाले
नेह के ये बंधन
गोबर से लीपे आँगन की
चमक है आँखों में
घर को रोशन करनेवाले
दीपक ताखों में
माटी की यह देह गाँव में
हो जाती चंदन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुमसे जुड़ना मुश्किल है

तुम जैसे हो भाई तुमसे जुड़ना मुश्किल है
तुम जैसे उड़ते हो मेरा उड़ना मुश्किल है
ऊँच-नीच और भेद-भाव से
भरे हुए हो तुम
वैसे तो जिंदा हो लेकिन
मरे हुए हो तुम
जितने गहरे बुड़े हो मेरा बुड़ना मुश्किल है
कहाँ-कहाँ तुम नहीं गये हो
क्या-क्या नहीं किया
एक भी ऐसा काम बता दो
जो की सही किया
जहाँ-जहाँ तुम मुड़े हो मेरा मुड़ना मुश्किल है
नये-नये प्रतिमान गढ़े
तुमने चोरी-चोरी
मौलिकता को आँख दिखाई
की सीनाजोरी
लाख कवायद कर लो मेरा कुढ़ना मुश्किल है

❐

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोग खाली जी रहे हैं

खा रहे हैं पी रहे हैं
लोग खाली जी रहे हैं
टूटते संवाद लेकर
सैकड़ों अवसाद लेकर
ज़ख्म सड़ते सी रहे हैं
अजनबी अंजान हैं सब
रूई डाले कान हैं सब
रिश्ते भी फर्ज़ी रहे हैं
काट कर फिर जोड़ देंगे
रूख कलम का मोड़ देंगे
क्या करें दर्ज़ी रहे हैं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिट्टी से भाग रहे

मिट्टी से भाग रहे माटी के पूत
खेतों सिवानों में नाचते हैं भूत
बाहर का कपड़ा है
बाहर की टोपी
पगड़ी उछाल रहे
चाचा की गोपी
खादी दम तोड़ रही सकते में सूत
खेतों में सन्नाटा
पोखर में लाशें
पानी की दोस्ती में
पिटते बताशे
मर्यादा मुश्किल में मौज में कपूत
मुखिया के दम पर ही
सारे जरायम
गुर्गे फल-फूल रहे
जलवा है कायम
सिमटी सी चाँदनी अंधियारा मज़बूत
मंदिर में जुटते हैं
दिनभर जुआरी
आधी कमाई का
मालिक पुजारी
थाने पर क्या जायें माँगता सबूत

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इतिहास बनाना है

बुड़े-बड़ों की अक्ल ठिकाने यार लगाना है
ज़ोर-शोर से अबकी इनको सबक सिखाना है
वैसे तो हरबार हमीं बेवकूफ बनाये जाते हैं
झूठे वादों झूठे नारों से भरमाये जाते हैं
राशन एकौ पाव नहीं पर बोरी भर-भर भाषण है
जाने कैसी जनसत्ता है जाने कैसा शासन है
राहत की उम्मीद नहीं है चोरी है बेईमानी है
पेट-पीठ से सटते देखा कम क्या यही निशानी है
चोर गिरहकट खूनी क़ातिल गुण्डों की ही चाँदी है
आम आदमी के हिस्से में बस केवल बरबादी है
पुलिस हुई असहाय प्रशासन मौनी बाबा है
बात उसी की सुनते जिसने जितना दाबा है
मँहगाई सुरसा के मुँह सी बढ़ती जाती है
रोज़ ग़रीबों के सीने पे चढ़ती जाती है
सरकारी स्कीमें बस फाईल तक सीमित हैं
हमसे-तुमसे दूर बहुत कागज़ पर जीवित है
भूख से मरनेवालों को बीमार बताया जाता है
रोटी छोड़ दवाई से इलाज कराया जाता है
खुला सेक्स-सेंसेक्स तरक्की का पैमाना है
पैसे की अंधी दौड़ के पीछे आज ज़माना है
फसल उगानेवाले देखो तरसे दाने को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आढ़तियों की टोली निकली मौज मनाने को
तलवे चाटनेवाले देखो आगे-आगे हैं
मेहनतकश मज़दूर बिचारे भागे-भागे हैं
पानी पी-पी कोस रहा है झूठ यहाँ सच्चाई को
तुझे सबक सिखलाऊँगा मैं डरा रहा अच्छाई को
खैर बहुत कुछ हुआ सहा अब अपनी बारी है
उन्हें बता दो अबकी अपनी भी तैयारी है
मूर्ख नहीं हम अक्लमंद हैं इन्हें बताना है
अबकी इनको मूर्ख बना इतिहास बनाना है

❐

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुछ बोलो आज़ाद

काहे को ये मौन धरा है
कुछ बोलो आज़ाद
लोकतन्त्र क्यूँ डरा-डरा है
कुछ बोलो आज़ाद
तुमने जो सपने देखे थे
साथ तुम्हारे चले गए
जिनके हाथों बागडोर थी
उनके हाथों छले गए
कौन है खोटा, कौन खरा है
कुछ बोलो आज़ाद
लंबी-चौड़ी बातें करनेवाले
बहुत मिले
चाभी नहीं मिली कोई पर
ताले बहुत मिले
आँख धँसी चेहरा उतरा है
कुछ बोलो आज़ाद
शर्मिन्दा हूँ कौन हो तुम
बतलाना पड़ता है
आज़ादी-आज़ाद हमें
समझाना पड़ता है
मूल्य पिटा आदर्श मरा है
कुछ बोलो आज़ाद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सबने मिलकर खेल
    है खेला
तुम हो अकेले कहाँ
    है मेला
चोट पुरानी ज़ख्म हरा है
    कुछ बोलो आज़ाद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इतने काँटे हैं

मछली भी कम पड़ जायेगी इतने काँटे हैं
कुछ हुनरमंदों ने टुकड़ों के भी हिस्से बाँटे हैं
ज़ोर-शोर से ताल ठोकनेवाले
गामा हैं
जैसे कृष्ण हैं यारों वैसे आज
सुदामा हैं
आडंबर तो बहुत बड़ा किरदार में नाटे हैं
खाली बैठे श्रवण आज के
हुक्म चलाते हैं
सत्तर बरसी श्रवण पिता पर
काम पे जाते हैं
गायब नींद पिता की बेटे के खर्राटे हैं
अंधों के स्वागत में सबकी
आँखें बिछी हुई
कलम पूजने वालों में
तलवारें खिंची हुई
काला-काला कोलाहल उजले सन्नाटे हैं
संबंधों की टूट-फूट
मर्यादा ख़तरे में
निष्ठा का बुझता दीपक है
कोने अतरे में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्यार के माने मस्ती मैट्रों सैर-सपाटे हैं
महावीर गौतम नानक की धरती
छली गई
बापू तेरी शिक्षाएँ संग तेरे
चली गई
पहला हो या दूजा गाल पे सौ-सौ चाँटे हैं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कागज़ी उजाले हैं

कागज़ी उजाले हैं रातों के हिस्से
नई-नई पंचायत घिसे-पिटे किस्से
कालिख के माथे है
चंदन का टीका
चीनी के घोलवाला
शरबत भी फीका
मुंशिफ भी बहरा था कहते तो किस से
रिश्ते छलावा हैं
दोस्ती पहेली
खुशियों की कुटिया है
दुख की हवेली
टूटे सब भीतर से मिलते हम जिससे
पानी के साथ गईं
हाँफती हवाएँ
अंधों ने बाँट ली
सारी दिशाएँ
तिनके ही हाथ लगे लाखों कोशिश से

❐

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शेर देखो सो रहा है

सोच में हैं सब परिंदे ये भला क्या हो रहा है
जिसको उड़ना चाहिये वो पर कटाये रो रहा है
उड़ रहे हैं लोग अपनी हैसियत को भूलकर
मारते हैं चोंच सबकी खैरियत को भूलकर
पड़ रहा छोटा इन्हें ये आसमाँ तो देखिये
फैलते जाने की अद्भुत दास्ताँ तो देखिये
जिन परों में जान थी ओर हौसला भरपूर था
उसके हिस्से कैद थी पिंज़रे में था मजबूर था
गिद्ध भी हैरान हैं ये गिद्ध-दृष्टि देखकर
कौरवों के हक में जाती दिव्य-दृष्टि देखकर
कोयलों के कूकने पर है यहाँ पहरा लगा
चीखती है सभ्यता सुनवाई में बहरा लगा
भूत-प्रेतों का बसेरा नाच जमकर हो रहा
कान में पर रूई डाले शेर देखो सो रहा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ख़ूब रही

भईया ये भी ख़ूब रही
अब ताल में नदियाँ डूब रहीं
आसमान से ऊँचा कद है
गिरने की भी लेकिन हद हे
कैलेन्डर तो ठीक रहा
तिथियाँ मनहूस रहीं
कुत्तों के पहरे में बब्बर शेर सुरक्षित हैं
घुट–घुट कर जीना होगा साँसे आरक्षित हैं
झुका थका हारा सा बरगद,
अकड़ी दूब रहीं
ख़ूनखराबा मारकाट अराजकता है
नंगा सच है भाई आदमखोर सभ्यता है
नया नहीं कुछ गाँव नगर गलियाँ
सब ऊब रहीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रणभूमि में अर्जुन

रणभूमि में देखो अर्जुन आवाक् खड़ा
बदल गई भूमिका आज के
पार्थसारथी की
बिकी हुई आत्मा हो जैसे
मंजे आढ़ती की
मौका देख के कान्हा चुपके से भाग पड़ा
अर्जुन टूट गया भीतर से
जड़वत खड़ा रहा
कैसे इस छलिया के फेर में
अब तक पड़ा रहा
बहुत कड़े दिन देखे पर ये सबसे रहा कड़ा
रातों-रात की इस साज़िश का
सूत्र देवकीनंदन था
कौरव के तंबू में रात को
महफ़िल थी, अभिनंदन था
हैरत में अर्जुन, कान्हा मुस्काता चिकना घड़ा
अर्जुन देख रहा कान्हा, कौरव संग
लगा हुआ
यही सोच मुस्काता, ऐसा किसका
सगा हुआ
मौत से घातक मित्रघात है सबक रहा ये बड़ा

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सरकारी दामाद

सरकारी दामाद मज़े में देखो रहते हैं
दफ्तर तो आते हैं काम से दूरी रखते हैं
नारेबाज़ी शोर-शराबा
काम नहीं बस हाबा-डाबा
धरना-भाषण गाली गुप्ता
बात-बात में सूअर कुत्ता
टांग घसीटेंगे पर कदम मिलाकर चलते हैं
सुबह से बैठक लग जाती है
दफ्तर ठेंगे पे
अंगद जैसे जम जाते सब
कुर्सी-टेबुल पे
फाईल जैसे काली नागिन देख सरकते हैं
जाम लगाते रस्ते पर
कमरों में जाम लड़ाते हैं
बिके हुए यूनियन लीडर ही
गला फाड़ चिल्लाते हैं
भीतर घुटनों के बल बाहर ख़ूब अकड़ते हैं
आँख लगी रहती है केवल
टीए-डीए पर
साहब से ज़्यादा खर्चा
साहब के पीए पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कागज़ पर दौरा होता घर बैठे रहते हैं
कामचोर की तूती बोले
मेहनतकश सन्नाटे में
असली कारण यही है जो
सरकार है इतने घाटे में
तेल लगाने वाले आगे कर्मठ सड़ते हैं

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चीनी है कम

कैसे लगेगा भला ये मौसम
लाखों संत्रास लिए घूम रहे हम
रातों की नींद उड़ी
बिटिया जवान है
देहरी पे सूदखोर
बेबस किसान है
हाथ पैर काँप रहे, आँखे हैं नम
दाखिल है मँहगाई
खुशियाँ हैं खारिज
पुर्खों के कर्ज़े का
इकलौता वारिस
आधा पेट भोजन है, भरपेट ग़म
छत्तीस से दूर रहे
पास रहे तिरसठ के
पैंसठ बेईमान मिले
आंकड़े में अड़सठ के
कड़ुवाहट बहुमत में चीनी है कम

❐

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बोलो कैसे गीत लिखूँ

बोलो कैसे गीत लिखूँ
काम नहीं बस हो-हल्ला है
धर्मराज देखो दल्ला है
मर्यादा की हार हर तरफ
कैसे जीत लिखूँ
रोज़-रोज़ है ख़ून खराबा
शासन जैसे मौनी बाबा
विस्फोटों की गूँज में कैसे
मैं संगीत लिखूँ
जिधर देखिये आग लगी है
बारिश रस्ता छोड़ भगी है
बाहर-भीतर सिर्फ तपिश है
कैसे शीत लिखूँ
साथ बराबर वो रहता है
मुझपर ही चालें चलता है
ऐसे भीतरघाती को कैसे
मैं मनमीत लिखूँ

❐

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लक्ष्मण रेखा

मत पूछो क्या-क्या देखा है
इन आँखों ने सब देखा है
हवा हो रहे रिश्ते-नाते
आदर्शों पर गाल बजाते
लक्ष्मण को भीतर देखा है
ये कैसी लक्ष्मण रेखा है!
बात-बात पर टाँग खींचते
हँस-हँस कर मुट्ठियाँ भींचते
बाहर से परिवार एक है
भीतर से क्या एका है।
काम-काज न धंधा-पानी
चोर पा गए हैं कप्तानी
राम भरोसे हिन्दु होटल
यही भाग्य का लेखा है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दस्तावेजों में मंगल है

तहस-नहस देखो जंगल है
खेत हो रहे ताल-तलैया
जीवन के हिस्से मृत्यु शैया
शेर बना है भीगी बिल्ली
कुत्तों को है बड़ी तसल्ली
दस्तावेजों में मंगल है
विषकन्या बन गइ दवा है
ज़हर बाँटती रोज़ हवा है
काँटे उठकर निकल पड़े हैं
हाथ जोड़कर फूल खड़े हैं
बदबू देता अब संदल है
आधा-तीहा ढके हुए हैं
समय से पहले पके हुए हैं
मुश्किल रात है जाड़ो वाली
जैसे बरफ पहाड़ों वाली
साठ भिखारी दो कंबल है
छान रहे सड़कों की धूल
काम-काज गूलर का फूल
डिगरी जैसे रद्दी टुकड़ा
पीठ फेर के सुनती दुखड़ा
पेट का रोटी से दंगल है

❑

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आवाज़ों की साजिश----

आवाज़ों की साज़िश ने सन्नाटा घोला है
मौन तोड़कर सन्नाटों ने भेद ये खोला है
सूरज की बैठक में
अंधियारा हावी है
रोशनी भी मानती है
साहब ये भावी है
अचरज की बात नहीं, बैगन का टोला है
शाखाएं आतुर हैं
खूब फैल जाने को
जड़ की समस्या को
जड़ से मिटाने को
साँपों को काट रहा उसका सपोला है
पैरों में जान नहीं
उड़ने की हामी है
पोखर से दूर रहे
करतब सुनामी है
सूरतें हैं प्याज की चोले पे चोला है
खुश्बुओं की आत्मा
नालों में डूबी है
तीखे रसगुल्ले हैं
कैसी ये ख़ूबी है
माथे पर फूटता नारियल का गोला है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिल्कुल नई कलम से

दकियानूसी सोच बढ़ाते बिल्कुल नई कलम से
कौन बताये ठहरे-ठहरे
पानी सड़ जाता है
नेह नहीं रहता जब कोई
गले ही पड़ जाता है
सत्य समझ जाओगे पहले निकलो ज़रा भरम से
ऊँचा उड़ने की चाहत में
धरती छूट गई
बंद थे सारे रस्ते हवा भी
आकर फूट गई
मूल दिखाई देगा पहले उतरो ज़रा चरम से
कैंची और कलम में लगता
कोई फर्क नहीं
हाथ गला सब काट रहे
जिससे सम्पर्क नहीं
अब भी साँसे बाकी हैं मर जाते नहीं शरम से
छुआ-छूत का खेल पुराना
जमकर खेल रहे
नई पौध को आगे बढ़कर
पीछे ठेल रहे
तुमसे क्या उम्मीद करें, खारिज हो दीन-धरम से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कलेजा फट रहा है

हाँ कलेजा फट रहा है
जिस तरह घर बंट रहा है
रोज़ ही करतब नये हैं
वो पुराना नट रहा है
काम कुछ होगा तभी तो
इस कदर वो सट रहा है
प्यास ने मारा वहीं पर
जिस जगह पनघट रहा है
ठीक है विस्तार लेकिन
जड़ से देखो कट रहा है
आ गया गमले में वो भी
कल तलक जो वट रहा है
मुल्क का मालिक है तोता
क्या है कहना रट रहा है

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाँव की राधा

नहीं पता या मँहगाई
ऐसी भी होती है
गाँव की राधा जिसकी खातिर
घर–घर सोती है
इसका सोना उनकी चाँदी
रोज़ की बातें हैं
राधा के हिस्से में केवल
काली राते हैं
फिर भी चुप रहती है
लौट के घर को आती है
कल फिर जाना है
यही सोच आँखे भर आती हैं
फिर उठती है छुप–छुपा के
नदिया पे जाती है
मजबूरी के अमिट दाग
घिस–घिस के धोती है

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सोच रहा हूँ मैं

रिश्ते-नाते क्या होते हैं सोच रहा हूँ मैं
ख़ुद को अपने भीतर जैसे खोज रहा हूँ मैं
बात-बात पर ताने सुनना
क्या मजबूरी है
दीवारें सब सटी हैं
सम्बन्धों में दूरी है
उड़ सकता था मगर परों को नोच रहा हूँ मैं
सही गलत है, गलत सही है
यही सही है क्या
दीन-धरम इमान करम अब
कहीं नहीं है क्या
हँसते-हँसते ग़म के आँसू पोंछ रहा हूँ मैं
चंदन तो चंदन है भाई
लाख कोई बोले
जो अनमोल है उसको कोई
मोल से क्या तोले
शब्दों के भाले से ख़ुद को कोच रहा हूँ मैं

❐

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उम्मीदों की पगडण्डी-----

ऊपर काले घने मेघ हैं
नीचे बीहड़ वन
उम्मीदों की पगडण्डी पर
दौड़ रहा है मन
अपने-अपने राग हैं सबके
अपनी-अपनी ढपली
नींद का कोई पता नहीं
पर ख्वाब हैं सबके लवली
किसको है परवाह यहाँ सब
खाये-पिये मगन
दाना-पानी घर-बाहर
सबकुछ तो करना है
पेट से लेकर बिल-फारम
सबकुछ तो भरना है
एक अकेला साथ लगे हैं
उसके तन, मन, धन

❐

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुब्बारे सी खुशी

गुब्बारे सी खुशी है अपनी
मौसम जैसे पिन
जाने कब तक टिकी रहेगी
कब जायेगी छिन
आँखों के तारों के पीछे
जीवन होम किया
सूरज जैसे चमका कर ही
चैन की साँस लिया
पता कहाँ चल पाया कब
रातें बीतीं कब दिन
होली गई दीवाली बीती
कोई ख़बर नहीं
फोन किया तो 'कोई बोली'
साहब इधर नहीं
कैसे तुम्हें बताऊँ बच्चों
कैसा हूँ तुम बिन
जिस अंगुली को थाम चले तुम
अब तो लुढ़क चली
आँखों को भी नहीं सुझाई
देती कोई गली
अपनी ही परछाई जैसे
हो बोतल का जिन्न
कोई गिला नहीं तुम सब से
ख़ुद की भूल रही
मैं ही शायद समझ न पाया
अब तक गलत सही
सोना जिसको समझ रहा था
वो तो, निकला टिन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दीप जलाना होगा

अंधियारों से लड़ने का संकल्प उठाना होगा
इस दिवाली आशाओं के दीप जलाना होगा
हँसी–खुशी उत्सव–उल्लास की
फूलझड़ियाँ छोड़ेंगे
दुख–तकलीफ की बुनियादों को
मिलकर हम तोड़ेंगे
ग़म की चकरी फूँक हमें मुस्कान सजाना होगा
मुस्कानों की लड़ी, प्यार की
दिया–सलाई होगी
नेह के रस में सराबोर हर
खील–मिठाई होगी
फोड़ पटाखे खुशी के ये पकवान खिलाना होगा
बारूदों की गंध न होगी
काला धुँआ न होगा
कान पकाता, दिल दहलाता
शोर मुआ न होगा
बहुत हुआ खिलवाड़ इन्हें अब दूर भगाना होगा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'कोहरे चादर तान रहे'

मौसम ने करवट ली, कोहरे चादर तान रहे
अब रातें लंबी होंगी, यह दिन भी मान रहे
ओस की बूंदे पत्तों पर
पारे सी फिसल रहीं
धुंध छांटकर धीरे-धीरे
किरणें निकल रहीं
नैसर्गिक परिवर्तन है यह, सारे जान रहे
शाल, दुशाले, स्वेटर, कम्बल
बाहर आये हैं
मौसम के बदले तेवर के
गीत भी लाये हैं
अलमारी से विदा हुये अब तक मेहमान रहे
रेलगाड़ियाँ, 'लेट राग' का
रोना पीट रहीं
बसें व्यवस्था जैसी अंधी
होकर चीख रहीं
सफर कठिन हो चला है 'बच्चू' बिल्कुल ध्यान रहे
आलस से बढ़ गई दोस्ती
नींद लगे प्यारी
घर में दुबके रहो रज़ाई ने
बोली मारी
खौलता पानी पूछ रहा हमको पहचान रहे

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आँखों में संगम

गंगा–जमुना की लहरों का
आँखों में संगम
खोल रहा है कौन न जाने
यादों का अल्बम

याद करो जब तुमसे मिलने
पहली बार गया था
नया–नया रिश्ता था अपना
पुल भी नया–नया था
ख़ूब घना कोहरा था उस दिन
सूरज था मद्धम

कुछ पल साथ रहे पुल पर
फिर नीचे उतर गये थे
नाव बँधी थी जिस तट पर
हम दोनों उधर गये थे
ख़ुद को बाँध रहे थे दोनों
खाते हुए कसम

एक लहर जमुना में
अपने मन में कई उठी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बोल रहीं थी आँखें
लेकिन पलके रहीं झुकी
जाने कब तट छूटा, संगम पर
आ पहुँचे हम
कैसे एक हुई गंगा-यमुना
हम देख रहे थे
चिड़ियों को दाना, अनुराग के
पासे फेंक रहे थे
ढाई आखर बाँच रहा था
खुलकर के मौसम

हवा चली, पलकें झपकी
बीता पल छूट गया
एक ही झटके में, ख्वाबों का
पुल भी टूट गया
यादों की पूँजी है अपनी
ये मीठा सा ग़म

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घर भी कब्रिस्तान लगता है

हो चाहें लोग जितने फिर भी वीरान लगता है
जो इक बेटी न हो तो घर भी कब्रिस्तान लगता है
बुरा है दौर बेटी जब तलक बाहर रहे घर के
थमी रहती हैं सांसे जिस्म भी बेजान लगता है
मैं जब भी छूता हूँ बिटिया तेरी नहीं हथेली को
हरी घासों का कोई मखमली मैदान लगता है
बहुत तकलीफ में था सुन के बेटी घर चली आई
हुआ मुश्किल था जीना अब मगर आसान लगता है
विदा होकर के बेटी तू गई है जबसे इस घर से
महज़ ईंटे और गारे का कोई सामान लगता है
ये आयेंगी जो दुनिया में तभी कहना ये गौतम तुम
गुलिस्तां अपना परियों का ये हिन्दुस्तान लगता है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'कोई सेंटाक्लाज नहीं'

मिली सल्तनत तकलीफों की, खुशियों वाला ताज नहीं
हम फुटपाथी बच्चों का, 'ईसा' कोई सेंटाक्लाज नहीं
चिथड़ों का ज़ेवर पहने हम
शीतलहर से जूझ रहे
खेलकूद की उमर में जीवन
कठिन पहेली बूझ रहे
रोम-रोम है चीख रहा, सुनता कोई आवाज़ नहीं
दर्द भरा सीने में अपने
पेट मगर खाली-खाली
पेट-पीठ से सटता जाता
भूख बजाती है ताली
कैसा रोग न जाने बाबा, कोई भी इलाज नहीं
मोटर गाड़ी में बच्चों को
देख के हम खुश होते हैं
दिल में कोई जलन नहीं
अपनी किस्मत पर रोते हैं
जाने कैसे जी लेते हम, ख़ुद हमको अन्दाज़ नहीं
खादी वाले बाबा, दिल्ली लखनऊ
की बस बात करें
तपते रेतीले बचपन पर
वादों की बरसात करें
शपथपत्र ये नंगे सच का, कविता या कोलाज नहीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

'कोई सेंटाक्लाज नहीं'

ंगी, खुशियों वाला ताज नहीं
ोई सेंटाक्लाज नहीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्लेष गौतम

जन्म : 21 दिसंबर, 1974, इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश)

शिक्षा : एम॰काम॰, एल॰एल॰एम॰, पी-एच॰डी॰ (विधि-शोधरत) इलाहाबाद विश्वविद्यालय।

सम्प्रति : अधिवक्ता, उच्च न्यायालय

प्रकाशन : देश के प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में कविताएं, दोहे, व्यंग्य लेख, समीक्षा आदि का निरन्तर प्रकाशन। पुस्तक 'आज के दोहे में भारत की तस्वीर' में देश के बीस चुनिंदा दोहाकारों के साथ दोहे प्रकाशित।

संपादन :

1. कैलाश गौतम समग्र (तीन खण्ड)
2. कैलाश गौतम की प्रतिनिधि रचनाएं
3. कलम बोलती है (चुनिंदा शायरों के शेरों का संग्रह)

शीघ्र प्रकाशित : एक दीपावली सात जुआरी (व्यंग्य लेख संग्रह)

सम्मान : शिशु वल्लभ अलंकरण, इटावा रचनाकार सम्मान, लखनऊ आदि

सम्पर्क सूत्र : 135, एम॰आई॰जी॰, प्रीतमनगर, इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश)
मो. 09415324228,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चाँद उलगता है

श्लेष गौतम

चिन्त्यम देवतां वाचम

हिन्दुस्तानी एकेडेमी
इलाहाबाद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection